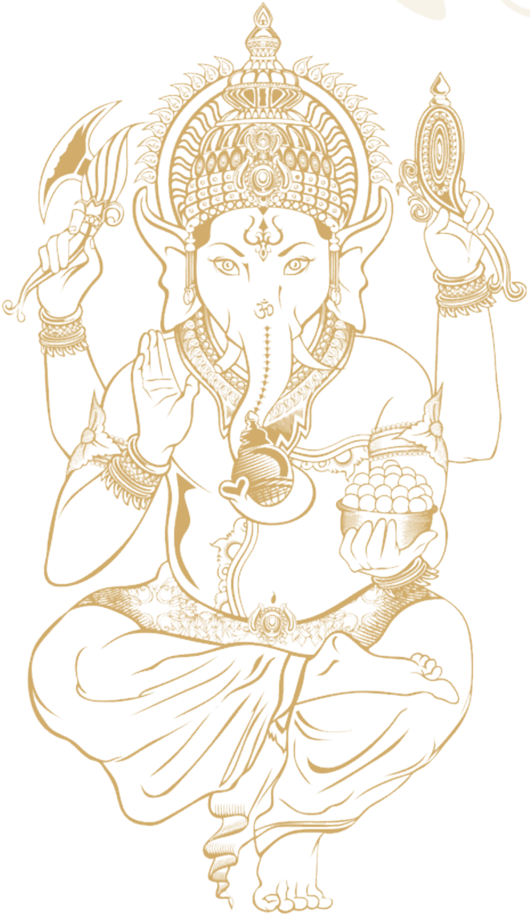

Rajesh Kumar Wohara

28 Aug 1977

06:40 AM

Jhabua

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119032501

तिथि 28/08/1977 **समय** 06:40:00 **वार** रविवार **स्थान** Jhabua **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:32:48
अक्षांश 22:59:00 उत्तर **रेखांश** 74:59:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:30:04 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	04:34:31 घं
वेलान्तर	00:01:17 घं
सूर्योदय	06:11:00 घं
सूर्यास्त	18:51:15 घं
चैत्रादि संवत	2034
शक संवत	1899
मास	श्रावण
पक्ष	शुक्ल
तिथि	15
नक्षत्र	धनिष्ठा
योग	अतिगण्ड
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गू-गूजरमल
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	सूर्य
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी
मंगल 3वर्ष 0मा 11दि
शनि
09/09/2014
08/09/2033

शनि	11/09/2017
बुध	22/05/2020
केतु	30/06/2021
शुक्र	30/08/2024
सूर्य	12/08/2025
चन्द्र	13/03/2027
मंगल	21/04/2028
राहु	26/02/2031
गुरु	08/09/2033

योगिनी
पिंगला 0वर्ष 10मा 12दि
भद्रिका
10/07/2021
10/07/2026

भद्रिका	21/03/2022
उल्का	19/01/2023
सिद्धा	09/01/2024
संकटा	18/02/2025
मंगला	10/04/2025
पिंगला	20/07/2025
धान्या	19/12/2025
भ्रामरी	10/07/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			16:51:07	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			11:04:56	सिंह	मघा	4	केतु	शनि	मूलत्रिकोण	1.94	भ्रातृ	पितृ	साधक
चंद्र			00:53:31	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.05	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			03:58:56	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि	1.40	ज्ञाति	भ्रातृ	जन्म
बुध	व	अ	25:46:53	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	मित्र राशि	1.31	अमात्य	ज्ञाति	वध
गुरु			07:40:59	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.40	मातृ	धन	सम्पत
शुक्र			05:45:51	कर्क	पुष्य	1	शनि	बुध	शत्रु राशि	1.06	पुत्र	कलत्र	क्षेम
शनि			28:43:56	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	शत्रु राशि	0.66	आत्मा	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		22:18:54	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	मूलत्रिकोण		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		22:18:54	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	मूलत्रिकोण		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

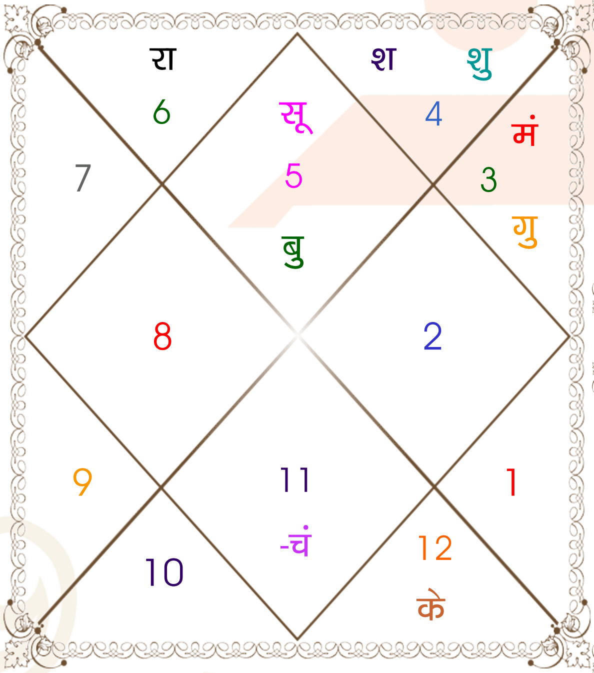

चन्द्र कुंडली

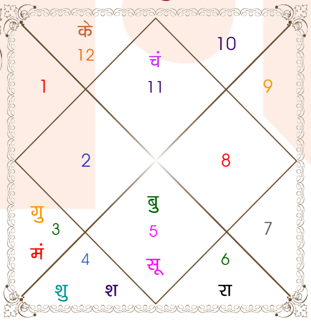

नवमांश कुंडली

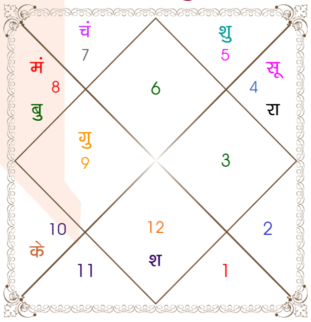

सर्वाष्टकवर्ग

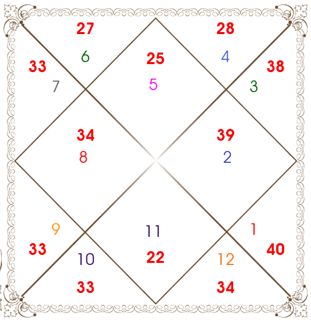

दशमांश कुंडली

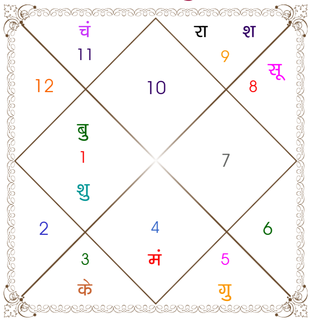

Dadieya occult sciences
Nearby Dabchick tourist place hodal
+919468279936
pankajkumar.dadieya@gmail.com

नक्षत्रफल

आप धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, योनि सिंह, नाड़ी मध्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ ”गु” या ”गू” अक्षर से होगा।

आप एक सदाचार से युक्त पुरुष होंगे तथा आपका चाल चलन भी उत्तम रहेगा जिसे समाज में अन्य लोग आपकी प्रशंसा करेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका अनुकरण भी करेंगे। आप एक व्यवहार कुशल व्यक्ति भी होंगे तथा अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही मधुर तथा अपनेपन का आभास करने वाला होगा। इस प्रकार आप अन्य व्यक्तियों के लिए सर्वदा आदर एवं सम्मान के पात्र रहेंगे एवं सभी लोगों पर आपका प्रभाव भी रहेगा। धन धान्य की आप में अधिकता रहेगी अतः एक धनाढ्हय पुरुष के रूप में आप जाने जाएंगे। आपमें शारीरिक बल पूर्ण मात्रा में रहेगा तथा स्वभाव से करूणा का भाव विद्यमान रहेगा अतः दीन दुःखियों पर आपकी विशेष कृपादृष्टि रहेगी। इस प्रवृति से आपकी दूर दूर तक ख्याति रहेगी साथ ही समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी रहेंगे एवं सभी लोगों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

आचारदातादरचारुशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आपके मन में कभी भी नैराशा की भावना उत्पन्न नहीं होगी तथा हमेशा आशान्वित रहकर जीवन व्यतीत करेंगे। अतः मानसिक कष्टों की अनुभूति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे। साथ ही सर्व प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर आप इनका प्रसन्नता पूर्वक जीवन में उपभोग करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूडुजनिः पीनोरुकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत शास्त्र के प्रति आपकी गहन रूचि रहेगी तथा इसमें आप प्रयत्नपूर्वक सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। आपको सम्पूर्ण कुल तथा परिवार में सम्मान तथा स्नेह प्राप्त होगा एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण रूपेण सम्मानित्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के स्वर्ण आभूषण तथा अन्य बहुमूल्य रत्नों से भी आप युक्त रहेंगे एवं किसी न किसी रूप में इसमें समृद्धि प्राप्त करेंगे। आप कई लोगों के मध्य एक प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति होंगे।

इनसे आपको पूर्ण आदर प्राप्त होगा एवं आपकी आज्ञा पालन करने के लिए ये सर्वदा तत्पर रहेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आपमें दनशीलता का भाव नेसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगा तथा समाज में दीन दुःखियों एवं जरूरतमन्द लोगों के प्रति आप इस प्रवृति का नित्यानुपालन करते रहेंगे। साथ ही वीरता एवं बहादुरी के गुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे तथा साहस एवं निर्भयता से अपनी समस्याओं का सामना करके उनका समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त धन के प्रति आपके मन में लालच का भाव रहेगा जिससे कभी कभी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा सहयोग उत्पन्न होंगी।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका ऊंची रहेगी तथा ललाट एवं मुखभाग विस्तृत होंगे साथ ही हाथ, पैर तथा कटिभाग भी स्थूलता से युक्त होंगे। आपके शरीर में कोमलता का ाभाव अल्प रहेगा फिर भी आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। समाज में आपके संबंध विस्तृत रहेंगे। उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं यदा कदा आप किसी का भी कहना नहीं मानेंगे इससे अन्य लोग आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में सामादृय श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही दूसरों की संतति के प्रति भी आपके मन में विशेष स्नेह की भावना भी रहेगी। आपके स्वभाव में कभी कभी दुष्टता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा एवं आलस का भी आप प्रदर्शन करेंगे। शिल्प विद्या या चित्रकारी के आप ज्ञाता होंगे तथा इस क्षेत्र में विशेष सफलता अर्जित करने में सफल हो सकेंगे। इसके अतिक्ति कभी कभी आप मानसिक

कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में आपकी रूचि रहेगी तथा इनमें आप निपुणता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही नाना प्रकार के शास्त्रों का भी आपको ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में आपका सम्मान रहेगा। आप में हिंसक प्रवृतियों की न्यूनता रहेगी एवं स्वभाविक शान्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। एवं वे सभी आपसे भयभीत रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप अप्रत्यक्ष रूप से कठोर कार्यों को सम्पन्न करेंगे या उसमें अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही यात्रा एवं भ्रमण कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अपने अधिकांश समय को इसी पर व्यतीत करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। आप हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी अपने मन में रखेंगे एवं इसके लिए यत्नशील भी रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में प्रायः उतार चढ़ाव आते रहेंगे एवं इसमें विषमता बनी रहेगी कभी अत्याधिक मात्रा में धन प्रप्ति होगी तो कभी अति न्यून मात्रा में। इसके अतिरिक्त चन्दन के अनुलेपन तथा पुष्प सुगन्ध में भी आपकी रूचि रहेगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

समाज में आप एक श्रेष्ठविद्वान होंगे तथा सर्वत्र आपकी ख्याति रहेगी परन्तु अन्य विद्वान लोगों को आप उचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में सुशीलता का अभाव रहेगा जिससे आपके व्यवहार से अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे एवं इसमें आपके सम्मान तथा प्रभाव में भी न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आपको जीवन में सर्वत्र विजय तथा सफलता अर्जित होती रहेगी साथ ही आप एक सच्चरित्र पुरूष होंगे तथा आपका चरित्र अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेंगे। आप धन सम्पत्ति से प्रायः युक्त रहेंगे। गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा

तथा इनको हार्दिक सेवा करने के लिए आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा तथा अपनी जाति या वर्ग के लोगों के लिए जो भी श्रेष्ठ या लाभदायक कार्य होगा उसको आप पूर्ण करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे अतः बन्धुवर्ग के मध्य आप पूर्ण रूप से आदरणीय तथा सम्मानित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा इनका अनुपालन करते हुए प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपके गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक दृष्टिगोचर होगी एवं नसें भी शरीर से बाहर प्रदर्शित होती रहेगी। साथ ही महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे एवं उनकी सहायता एवं सहयोग के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऽध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आपके मन में दानशीलता की प्रवृति प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही अन्य जनों के उपकार संबंधी कार्यों को करने में भी आप प्रायः उद्यत एवं प्रयत्नशील रहेंगे। आपके मन में कृतज्ञता की भावना का भी समावेश रहेगा। साथ ही कई प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी सुन्दर होगी एवं बुद्धि सरलता से युक्त रहेगी एवं किसी भी प्रकार के प्रपंच या धोखे से आप विहीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन एवं विद्यार्जन करने के लिए आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। आप अपने सत्कार्यों के द्वारा तथा स्नेहशील व्यवहार से समाज में ख्याति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने बाहुबल से धनार्जन करेंगे तथा साहस एवं निर्भयता पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने वाली

होगी तथा आपके मन में दया एवं करूणा का भाव अल्प रूप से ही विद्यमान रहेगा परन्तु आप एक साहसी पुरूष होंगे। अतः आपके अधिकांश कार्य साहस एवं निर्भयता से ही सम्पन्न होगे। आप के स्वभाव में क्रोध की भी प्रवलता रहेगी तथा कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे।आप में विवाद की प्रवृति भी रहेगी एवं अन्य जनों से परस्पर विवाद प्रायः होता रहेगा। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप बलशाली रहेंगे।

जीवन में आप कभी कभी उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका शारीरिक सौन्दर्य मध्यम रहेगा साथ ही यदा कदा आप अपने संभाषण में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी धर्म के प्रति हार्दिक निष्ठा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा जीवन में आप यत्न पूर्वक इसका अनुपालन करते रहेंगे। आप प्रायः अच्छे कार्यो को करने के प्रति रूचिशील दौरान आपकी- इन कार्यो से अन्य सामाजिक जन भी लाभान्वित होंगे। आपमें सद्गुणों की भी प्रधानता रहेगी। अतः सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने कुल या परिवार की समृद्धि के लिये आप हमेशा चिन्तित रहेंगे एवं इसे पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यो में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का

भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रूग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गंडयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरुवार, तृतीय प्रहर एवं धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में त्याज्य रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में चिन्ता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्णपादुका आदि पदार्थो का दान

करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलेगी साथ ही अशुभ फलों का प्रभाव खत्म होकर शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।